जायसी का प्रकृति-चित्रण

भारतीय काव्यशास्त्र में संस्कृत के आचार्यों ने महाकाव्य के जो लक्षण बताये हैं, उनमें उषा, संध्या, सूर्योदय, वन, सरिता, वर्षा, बसन्त आदि के रूप में प्रकृति का वर्णन होना भी एक लक्षण है। जायसी के 'पद्मावत' में प्रकृति का इतना विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है कि इस महाकाव्य का प्रकृति-वर्णन महाकाव्य के लक्षणों को पूरी तरह स्पर्श करता है।

जायसी ने नागमती की वियोगावस्था में उसे कष्ट देने वाली प्रकृति का वर्णन तो बारहमासा के रूप में किया है, पर प्रकृति के कोमल रूप का वर्णन छिट-पुट रूप में जहाँ-तहाँ बिखरा हुआ है।

पद्मावती सिंहलद्वीप की राजकुमारी थी। वहाँ के राजा का नाम गंधर्वसेन था। सिंहलद्वीप में प्रकृति अपने यौवन की पूरी छटा बिखरा रही थी—

घन अमराउ लाग चहुँपासा, उठा भूमि हुत लागि अकासा।
तरिवर सबै मलयगिरि लाई, भइ जग छाँह रैनि होइ आई।
मलय समीर सोहावन छाँहा, जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ।
ओही छाँह रैनि होइ आवै, हरियर सबै अकास दिखावै।
अस अमराउ सघन घन, बरनि न पारौ अन्त।
फूलै फरै छवी ऋतु, जानहु सदा बसन्त॥

सिंहलद्वीप के चारों ओर आम के बगीचे तो थे ही, इस प्रकार के उपवन भी थे, जिनमें तरह-तरह के वृक्ष खड़े थे। यह बात अलग है कि जायसी का इन वृक्षों का वर्णन केशवदास के समान वर्णनात्मक हो गया है—

यह स्वाभाविक है कि बगीचों में फलदार वृक्ष होंगे तो उनमें पक्षी भी होंगे। पक्षी वैसे भी वृक्षों पर घोंसला बनाते हैं और धूप से परेशान होकर पेड़ों की छाया में आश्रय लेते है। फल वाले वृक्षों के बागों में तो भाँति-भाँति के पक्षी होने चाहिए। बाग में फल और छाया हो तो पक्षी आनन्द से चहकते हैं। जायसी ने सिंहलद्वीप के चारों ओर फैले बागों के वृक्षों और फलों का वर्णन करने के पश्चात् उनमें बोलने वाले पक्षियों का वर्णन इस रूप में किया है—

बसहिं पंखि बोलहिं बहु भाखा, करहिं हुलास देखि कै साखा।

महाकाव्योचित प्रकृति-वर्णन में जलाशयों के वर्णन का भी उल्लेख किया गया है। सिंहलद्वीप में जायसी ने 'मानसरोदक नामक सरोवर का विस्तार से वर्णन किया है। सरोवर में जल की शोभा तो होती ही है, भाँति-भाँति के जल-पक्षी भी वहाँ बैठते और उड़ते हैं। जायसी ने मानसरोदक सरोवर की शोभा का वर्णन इस प्रकार किया है—

मानसरोदक बरनौ काहा, भरा समुद अस अति अवगाहा।
पानि मोति अस निरमर तासू, अमृत आनि कपूर सुबासू।
लंकदीप कै सिला अनाई, बाँधी सरवर घाट बनाई।
खँड-खँड सीढ़ी भई गरेरी, उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरी।
फूला कँवल रहा होइ राता, सहस सहस पखुरिन कर छाता।
उलथहिं सीप मोति उतराही, चुगै हंस औ केलि कराहीं।
खनि पतार पानी वहँ काढ़ा, छीर समुद बिकसा हुँत बाढ़ा।
ऊपर पाल चहूँ दिसि, अमृतफल सब रूख।
देखि रूप सरवर कै, गै पिपास और भूख॥

सिंहलद्वीप में अकेला 'मानसरोदक' सरोवर ही नहीं, वहाँ अन्य अनेक छोटे-बड़े तालतलैयाँ भी थे। सभी तालाब इतने विशाल थे कि इस किनारे पर खड़े होकर दूसरा किनारा दिखाई नहीं देता था। तालाबों में जल के फूल और जल के पक्षी होते हैं। संभवत: जायसी 'मानसरोदक' के वर्णन में जल के पुष्पों के और बहुत-से जल-पक्षियों के नाम गिनाना भूल गये थे। उस कमी को पूरी करते हुए अर्थात् उस भूल का सुधार करते हुए जायसी लिखते हैं—

Scanned with CamScanner

ताल तलाब बरनि नहिं जाहीं, सूझै बार-पार कहुँ नाहीं।
फूले कुमुद सेत उजियारे, मानहु उए गगन महुँ तारे।
उतरहिं मेघ चढहिं लेइ पानी, चमकहिं मच्छ बीजु कै बानी।
पौरहिं पंखि सुसंगहि संगा, सेत पीत राते बहुरंगा।
चकई-चकवा केलि कराही, निसि के बिछोह, दिनहिं मिलि जाहीं।
कुररहिं सारस करहिं हुलासा,जीवन मरन सो एकहिं पासा।
बोलहिं सोन ढेक बगलेदी, रही अबोल मीन जल भेदी।
नग अमोल तेहि तालहिं दिनहिं बरहिं जस दीप।
जो मरजिया हइ तहँ सो पावै वह सीप॥

अलंकार रूप में प्रकृति-वर्णन—नारी सौन्दर्य का वर्णन करते समय कवि प्रकृति से ही उपमान ग्रहण करते हैं। अलंकार रूप में भी जायसी का प्रकृति-वर्णन आकर्षक है। पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन हीरामन तोता राजा रत्नसेन को सुना रहा है—

कहौं लिलार दूइज के जोती, दुइजहि जोति कहाँ जग ओती।
सहस किरिन जो सुरुज दिपाई, देखि लिलार सोउ छपि जाई।
का सरिबरि तेहि देउँ मयंकू, चाँद कलंकी यह निकलंकू।
तेहि लिलार पर तिलक बईठा, दुइज पाट जानहुँ धुव दीठा।
सरग धनुक चक बान दुइ, जग मारन तिन्ह नावँ।
सुनि कै परा मुरिछि कै राजा, मोकहँ हए कुठाउँ॥
भौहें स्याम धनुष जनु ताना, जो सहुँ हेर मार विष बाना।
भोंह धनुक, धनि धानुक, दूसर सरि न कराइ।
गगन धनुक जोऊगै, लाजहि सो छपि जाइ।

बारहमासा के रूप में प्रकृति-वर्णन—मलिक मोहम्मद जायसी ने बारहमासा के रूप में भी प्रकृति का वर्णन किया है। वर्ष के बारहों महीनों में प्रकृति अपनी छटा बदलती है। ऐसा जान पड़ता है, मानो प्रकृति सुन्दर वस्त्र-परिवर्तन करके भिन्न-भिन्न रूपों में सुशोभित हो रही है।

चित्तौड़ का राजा रत्नसेन हीरामन तोता के मुख से सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर उससे मिलने को चला गया। उसकी पत्नी नागमती उसके वियोग, में दुखी होने लगी। जायसी ने वियोग में नागमती के वर्षभर के कष्टों का वर्णन प्रकृति-वर्णन के माध्यम से किया है। वियोगिनी नागमती को प्रकृति का कोई भी रूप सुख नहीं पहुँचाता था। जायसी ने बारहमासा के माध्यम से प्रकृति का वर्णन असाढ़ के महीने से आरम्भ करके जेठ पर समाप्त किया है।

असाढ़ का महीना आरम्भ हो गया है। आकाश में बादल गरजने लगे हैं। धुमैले और काले बादल दौड़ रहे हैं। उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति सफेद रंग का झंडा मालूम होता है। बादलों में बिजली तलवार के समान चमक रही है। आकाश से पानी की बूंदें इस तरह गिर रही हैं, जैसे युद्ध में बाण गिरते हैं। मेंढ़क, मोर, कोयल और पपीहा प्रसन्न होकर बोल रहे हैं। कड़कती हुई बिजली ऐसी गिरती है कि शरीर में प्राण ही नहीं रहते हैं।

वियोगिनी का दुख बढ़ाने वाली असाढ़मास प्रकृति का वर्णन जायसी ने विस्तार से किया है—

चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा, साजा बिरह दुदु दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन छाए, सेत धजा बगपाँति दिखाए।
खड़ग बीजु चमके चहुँ ओरा, बुंद बान बरसहिं घन घोरा।
दादुर मोर, कोकिला पीऊ, गिरे बीजु घट रहै न जीऊ।

सावन के महीने में अत्यधिक वर्षा हुई है। बाहर वर्षा हो रही है और भीतर नागमती वियोग में जली जा रही है। सावन के महीने में लाल रंग का एक मुलायम रोओं वाला गोल छोटा कीड़ा रेंगता फिरता है। नागमती को लगता

Scanned with CamScanner